BA-(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट - थर्ड
व्याख्या - 17

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

सप्रसंग व्याख्या (पत्रहीन नग्न गाछ) :

"अहुना कुऔ ठाँढ़ि-पठाहिं
आपके देलक आढ़ि जबाब ?
जाउ छौतन, की कहब आहाँ के
अपन जेठ भायसँ
किछुओ त सिखने रहितहुँ।"

प्रस्तुत पद्यांश श्री वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जीक 'पत्रहीन नग्न गाछ' पोथी मे संकलित 'पिता-पुत्र संवाद' शीर्षक कविता सँ लेल गेल अछि। एहि मे पिता शिव अपन पुत्र गणेशसँ प्रश्न पुछैत छथि जे कुंठा, संत्रास आ मृत्युबोध की थिकइ। की थिकइ आक्रोश क विस्फोट ? एहि पर श्रीगणेश ठाँढ़ि-पठाहिं पिताकें जबाब देलथिन्ह। की थिकई कुंठा, संत्रास, मृत्युबोध आक्रोशक विस्फोट से हम बुझा दितहुँ, मुदा आहाँ कैलाश सँ नीचाँ तकितो नहि छी से त आहाँ नीचाँ ताकिए नहि दैत, ता तकबे नहि करबैए।

श्री गणेशक एहि तरहें देल जबाब पर माता गौरी अपन पुत्र गणेश के सहज रूपें कहलथिन-

अइना कओ आपके ठाँहि - पठाहिँ जबाब देहु
अपन जेठ भाइ सँ सिखु त सिखने रहितहुँ

"साइन्सक पचफोड़नासँ छौंकल छइन
आधुनिक बुद्धक विवेक ओ नियम
शोधित छइन मैत्री भावना हितक
अर्थशास्त्र - राजनीति आदिक पुलपाकसँ इ।"

प्रस्तुत पद्यांश वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' जी रचित 'पत्रहीन नग्न गाछ' पोथी सँ लेल गेल 'आजुक महाकारुणिक बुद्ध' शीर्षक सँ लेल गेल अछि। एहि कवितामे आजुक राजनीतिक नेता पर व्यंग्य कैल गेल अछि। आजुक नेताक सभ बोल - आश्वासन बुद्धक पुलिन्दा थिक। ओ अपना के बुद्ध जकाँ कारुणिक आ निरवाण घोषित करैत छथि मुदा सभ फुइस। ओ देश - विदेश भ्रमण मे, खूब लबाक प्रपंचमे सतत लागल रहैत छथि। जनताक बीच विश्वासक सपना देखबैत छथि, मुदा अर्थशास्त्रक ज्ञान प्रस्तुत करैत अपना के जन हितैषी घोषित करबामे लागल रहैत छथि। फलतः देश सँ मैत्री भेल तखन लोक देशवासी कें सान्त्वना मुदा सभ वस्तुक योजना पड़ल रहि जाइत अछि।

राजनीतिक नेतागण आइ-काल्हि कल्याणक भाव देखा जनताकेँ भोटक ठकैती करबामे प्रपंच

করেন আছি। শুধু বিজ্ঞানকে ঈশ্বরের বলা
অহংবাদকে ছেলেবাক তেমন দেখতে হইলো। যেমন
লোক জনতাকে আপন - বিধাতা বলল আছি।
বস্তুজগৎ হিসাব বস্তুজগৎ ভূবোধ কে মন্ত্র জয় করে
হইলো। এই বিজ্ঞানই আধুনিক যুগে।

Samarjit Kumar
18/07/20